नं० ५५०८ — च

तलवार (कविता)

पत्राणि ४ (चत्वारि)

नं० १०१७

5508 / 14

C 191

श्रीगणेशायनमः॥ ॐमंगलकेसे
वाहनुमेरीदेवा॥हाथ्यज्वडदरभा
रघडी॥मातहपारीदाजनिधीला
लेंब्रबितेरीभीटदौं॥हनुमेरीग्रं
विजगानप्रलंवी॥संतनप्रनपाले



स १

करतऊसालो॥जैकालीकल्याणक
रि॥२॥भुयपभुयातासबजगमाता॥तूं
सिंहमरिकाजसरि॥चरणकमल
कालेयोग्रासरा॥सरनतुमारीश्रा
नपडी॥जोंजोंसंतनकोंपीडपरी॥

नंतारक्षाआपकरी॥संतनप्रति
पालीकरनऊषालेजैकालीक
ल्यानकरी॥२॥बीरबारतिसबजग
मुयोतरनअनोपेनुपकरिमात्ता
ऊकर॥पुत्रदिषाबिभार्याऊकरषि

स॰
२

लकरि ॥ नेरो अंतन पाई ॥ आपे दे
टी घेलकरि ॥ संतन प्रतिपाले क
रत ऊसाले जै काली कल्याण क
री ॥ ३ ॥ सुक्र सुखदाई सदा सहा
ई ॥ संत एवं डिई जै कार करि ॥ ब्रह्म

विस्नुमहेसा ॥ सकेनवेदलीहु९
ऊँकारकरे ॥ अटलसंघासनका
राजकरी ॥ सीरकंचनकाछत्रथ
री ॥ संतनप्रतिपालेकरनऊसा
लीजैकालीकल्याणकरी ॥ ४ ॥ आ

स॰
३

3

नखुरवारकेमहिमाजवलंकोडि
वीरकोऊकमकरि॥खपरवात्रिस्तू
लावक्रूरक्रबीजकोभस्मकरि॥सं
भनि:सुंभपकडक्काडि॥महिषा
सुरसबमारयरि॥संजनप्रतिपा

लेकरतऊसालेजैकालीकल्यान
करी॥प॥ऐतवारदिनआदऊवा
रीजिनकेसंकटआपहरी॥कोपवे
करदौनोमारी॥चंडमुंडसवदोरक
रि॥संतन॥ई॥सोमसहायरदेवी जि

स० ५

नकीश्रवजकष्टलकरी॥सिंद्युपीह
ठपरचडी॥भवानीसकलभवनका
राजकरि॥दरसनश्राईमंगलगाई
सायसंतसवक्षपयरी॥संतनप्रीतिपा
लेकरनऊसालेजै॥इतिसतवारसंपूर्ण